एतदर्थ मंडल (हिंदी भाषा परीक्षा), महाराष्ट्र शासन

भाषा संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, प्रशासकीय भवन, ५ वी मंजिल

डॉ.आंबेडकर उद्यान के निकट, सरकारी कालोनी, बांद्रा (पूर्व), मुंबई-४०० ०५१.

उच्चश्रेणी परीक्षा

रविवार, दिनांक

(समय- दोपहर २.०० से ४.३० बजे तक)

(कुल अंक-१००)

दूसरा प्रश्नपत्र : निबंध लेखन, पत्र लेखन, सार लेखन, अनुवाद इ.

सूचनाएँ :-

१. **प्रश्न क्र.२ रा को छोड़कर सभी प्रश्नों के उत्तर हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखें |**
२. **शुद्ध भाषा तथा सुवाच्च लेखन अपेक्षित है |**

प्र.१ ला **निम्नलिखित विषयों में किसी एक विषय पर लगभग पच्चीस-तीस पंक्तियों में निबंध लिखिए |** (२०)

(अ)

१) यदि मैं प्रधानमंत्री होता ...
२) यदि मैं राष्ट्रपति होता ...
३) यदि मैं मुख्यमंत्री होता ...
४) वृक्षारोपण
५) मेरा प्रिय खेल
६) एक फटी पुस्तक की आत्मकथा
७) परीक्षा शुरू होने के आधा घंटे पहले
८) मेरा प्रिय नेता
९) मेरा प्रिय हीरो
१०) मेरा प्रिय खिलाड़ी
११) मेरा प्रिय खेल
१२) मेरी महत्त्वाकांक्षा
१३) मेरा प्रिय त्यौहार
१४) रेल्वे स्टेशन पर एक घंटा
१५) खेल के मैदान पर एक घंटा
१६) प्रदर्शनी में एक घंटा
१७) बस-स्थानक पर एक घंटा
१८) गाँव के मेले में दो घंटे
१९) नदी-किनारे की एक संध्या
२०) नदी-किनारे एक घंटा
२१) मेरा देखा हुआ कवि-सम्मेलन
२२) दूरदर्शन-एक शाप
२३) मेरे जीवन का अविस्मरणीय दिवस
२४) एक आदर्श विद्यार्थी
२५) यदि मैं डॉक्टर होता ..
२६) यदि मैं अध्यापक होता ..

२७) यदि बिजली न हो तो ..
२८) यदि रात न होती
२९) यदि समाचार-पत्र न होते
३०) संगणक का महत्त्व
३१) यदि वर्षा न हुई
३२) एक जख्मी सैनिक की आत्मकथा
३३) एक टैक्सी ड्राइवर की आत्मकथा
३४) एक बाढ़पीड़ित की आत्मकथा
३५) एक भूकंपपीड़ित की आत्मकथा
३६) किसान की आत्मकथा
३७) एक मुरझाए फूल की आत्मकथा
३८) मजदूर की आत्मकथा
३९) बेकार युवक की आत्मकथा
४०) विज्ञान-एक वरदान
४१) दूरदर्शन-शाप या वरदान ?
४२) दीपावली त्यौहार
४३) वृक्ष लगाओ, देश बचाओ
४४) प्रदूषण-बड़ी समस्या
४५) रक्षाबंधन
४६) समय का महत्त्व या सदुपयोग
४७) मेरा भारत महान
४८) गरीबी-एक अभिशाप
४९) मेरी माँ
५०) मनोरंजन के आधुनिक साधन
५१) विविधता में एकता
५२) बुढ़ापा एक अभिशाप
५३) हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी
५४) वर्षाऋतु
५५) दशहरे का त्यौहार
५६) मेरे जीवन का अविस्मरणीय प्रसंग
५७) माता की ममता
५८) राष्ट्रीय त्यौहार
५९) पर्यावरण और विकास
६०) मेरा प्रिय महाराष्ट्र
६१) पानी की समस्या और उपाय
६२) मेरी की हुई सैर
६३) श्रम का महत्त्व
६४) युद्ध से लाभ-हानि
६५) पेड की आत्मकथा
६६) निरक्षरता-एक अभिशाप
६७) विविधता में एकता
६८) यदि बरसात न हो
६९) यदि परीक्षाएँ न होती ..

७०) एक घायल सैनिक की आत्मकथा

७१) विज्ञान और मानक

७२) नारी का बदलता रूप

अथवा

(ब) <u>निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर १५ से २० पंक्तियों में एक कहानी लिखिए |</u>
<u>कहानी से प्राप्त सीख बतलाते हुए कहानी को उचित शीर्षक दीजिए |</u>

१) एक नाई- एक चमत्कारी मुर्गी मिलना- मुर्गी का रोज सोने का एक अंडा देना- नाई का अमीर हो जाना- गाँवभर में चर्चा- इज्जत बढ़ना- सारा सोना एक साथ पाने की लालसा- मुर्गी को मार डालना- अंडे मिलना बंद होना- लालच में सोने के सब अंडे खो देना- सीख |

२) एक भिखारी- दीनहीन- लक्ष्मीमाता से प्रार्थना- लक्ष्मी प्रसन्न- वरदान- मुहरों की माँग- देवी की शर्त मुहरें जमीन पर गिरने पर उनकी मिट्टी हो जाएगी | भिखारी द्वारा अपनी फटी पुरानी झोली फैलाना- लक्ष्मीमाता का मुहरें देना- लालच- झोली का भर जाना और फटना- मुहरों का बिखरना- सीख |

३) दो मित्र- नौका से मछली पकड़ने के लिए निकलना- सागर में तूफान- नौका का टूटना- दोनों का एक ही तख्ते का सहारा लेना- तख्ता केवल एक का भार सँभालने में समर्थ- एक मित्र विवाहित और दूसरा अविवाहित- "मेरी माँ को संभालना" इतना कहकर अविवाहित मित्र का तख्ते को छोड़ देना- दूसरे का बचना |

४) राकेश नाम का तरूण- सुंदर लड़की से प्रेम-विवाह करना- मौज-मजे करना- कुछ दिनों बाद- राकेश द्वारा दहेज की माँग करना- पत्नी के पिता की गरीबी- दहेज को लेकर दोनों में झगड़ा होना- राकेश का पत्नी से मारपीट करना- पत्नी का अपने पिता के घर चले जाना- पुलिस केस- परिणाम |

५) एक विद्यार्थी- मंदबुध्दि होना- माता-पिता निराश- शिक्षक का समझाना- ध्यान न देना- निराश होकर चल पड़ना- मार्ग में कुआँ- स्त्रियों को पानी भरते हुए देखना- कुएँ के पत्थरों पर गहरे निशान- स्त्रियों के कारण पूछना- रस्सी के निशान- बोध होना- अभ्यास में जुट जाना- बड़ा विद्वान बनना- सीख |

६) हल्दीघाट का संग्राम- राणा प्रताप द्वारा वीरतापूर्वक मुकाबला- जख्मी होकर गिर पड़ना- एक चील का ललचाकर आना- राणा प्रताप की आँख पर ध्यान- पास में ही पड़े सरदार का देखना- अपनी जाँघ का माँस काटकर फेंकना- माँस खाकर चील का उड़ जाना- राणा प्रताप की रक्षा- उनके द्वारा सरदार का सम्मानित होना |

७) एक सुहावना वन- भगवान का आगमन- वहाँ के सृष्टिसौंदर्य को देखकर भगवान खुश- लेकिन आश्चर्य- एक सूखे वृक्ष पर एक दु:खी तोता- भगवान का प्रश्न- हरेभरे वृक्षों को छोड़कर इस वृक्ष पर क्यों ? तोते का उत्तर- यह वृक्ष पहले हराभरा और फल- फूलों से संपन्न था - अब बुरे दिनों में इसका साथ कैसे छोडूँ ? भगवान का उत्तर |

८) एक जमींदार- बहुत से नौकर-चाकर-खेती की आमदनी का न बढ़ना- मित्र की सलाह- "सुबह खेत की सैर करो"- कुछ नौकर गायब- कुछ चीजें गायब- रोज देखभाल- आँखे खुलना- खुद काम में लग जाना- सभी में उत्साह- आमदनी बढ़ना- सीख |

९) एक विद्यार्थी- परीक्षा में असफल रहना- निराश होना- जंगल में जाना- एक मकड़ी द्वारा पेड़ पर बार-बार चढ़ने का यत्न करना- विद्यार्थी का देखना- सफलता का मार्ग मिलना- वापस आना- ध्यान से पढ़ना- सफल होना |

१०) किसी गाँव मे अकाल- दयालु जमींदार द्वारा रोज लोगों को रोटियाँ बाँटना- कुछ लोगों का रोटी न लेना- रोटियों में एक छोटी रोटी बाकी रह गई- छोटी रोटी लेने में संकोच- एक बालिका का छोटी रोटी लेना- घर जाना- रोटी तोड़ना- रोटी में सोने का सिक्का निकलना- लड़की का जमींदार के पास जाना- सोने का सिक्का लौटाना- जमींदार की ओर से इनाम पाना- शिक्षा |

११) यात्रा के लिए यात्रियों का जहाज में बैठना- सागर में दूर तक जाना- अचानक जहाज में छिद्र होना- जहाज के अंदर पानी आना- यात्रियों का घबराना- नाविक का मदद के लिए आह्वान- लोगों के प्रयत्न- पानी बाहर फेंकने की कोशिश- जहाज को डूबने से बचाना- यात्रियों का सुरक्षित किनारे पहुँचना।

१२) एक बूढ़ा किसान- चार लड़के आलसी और निकम्मे- पिताजी की परेशानी- पिता का मृत्युशय्या पर पड़ना- तरकीब- चारों बेटों को बुलाकर कहना- "खेत में धन गाड़ रखा है।" पिता की मृत्यु- चारों बेटों द्वारा खेत की खुदाई करना- धन न मिलना- खेत में बीज डालना- बहुत अच्छी फसल होना- श्रम का महत्त्व समझना- सीख।

१३) एक किसान-चार लड़के-चारों झगड़ालू- किसान तथा गाँव के बड़े-बूढ़ो द्वारा समझाना-किंतु लड़कों का न मानना-किसान का तंग आ जाना-अंत में एक तरकीब-एक-एक लड़के को एक-एक लकड़ी देकर तोड़ने को कहना- लकड़ियों का टूट जाना- बाजार में से लकड़ियों का गट्ठर लाना-लड़कों से गट्ठर तोड़ने को कहना- न टूटना- तरकीब की सफलता- लड़कों के आचरण में परिवर्तन आ जाना।

१४) राम और श्याम दो मित्र-एक दूसरे की सहायता करने का वादा-एक दिन जंगल से गुजरना-भालू का आना-राम का पेड़ पर चढ़ना-श्याम वृक्ष पर चढ़ने में असफल-श्याम का साँस रोके पड़े रहना-भालू का लौट जाना-राम का पेड़ से नीचे उतर आना- भालू ने तेरे कान में क्या कहा ?-- श्याम का उत्तर- संकट के समय जो मित्र सहायता नहीं करता उसकी संगति छोड़ दो- सुनकर राम का लज्जित होना- सीख (शिक्षा)

१५) राजा के दरबार में एक रिश्वतखोर द्वारपाल- प्रवेश के लिए लोगों से रिश्वत लेना-कभी न पकड़ा जाना- एक चतुर कवि का आगमन- प्रवेश देने की प्रार्थना- द्वारपाल द्वारा आधे पुरस्कार की माँग- कवि का आश्वासन देना- दरबार में कविता का पाठ-राजा का खुश होना- "इनाम माँगो" "सौ कोड़े" - सबको आश्चर्य- कवि के पचास कोड़े पूरे होना-द्वारपाल को शेष पचास कोड़े।

१६) चार चोरों का धन चुराना-समान बँटवारे के लिए जंगल में जाना-भूख लगना-दो चोरों को मिठाई खरीदने के लिए भेजना- नीयत बिगड़ना-मिठाई में जहर मिलाना- इधर दोनों के मन में पाप समाना- मिठाई लानेवालों को मार डालने की योजना-हाथ-मुँह धोने के लिए दोनों को कुएँ पर ले जाना-कुएँ में धकेल देना-मिठाई खाकर पहले दो का भी मर जाना- सीख।

१७) एक गाँव-पालतू हाथी-प्रतिदिन पानी पीने तालाब पर जाना-रास्ते में एक दर्जी की दुकान-दोनों में मित्रता-तालाब की ओर जाते समय हाथी को कुछ खिलाना-लौटते समय दर्जी को कमल-पुष्प देना-एक बार दर्जी के मन में शरारत का विचार-हाथी की सूँड़ में सुई चुभाना-लौटते समय सूँड़ में कीचड़ भर लाना-दर्जी की दुकान में फेंकना। सीख।

१८) एक जंगल- जंगल में शिकारी द्वारा जाल बिछाना- जाल पर अनाज के दाने डालना- पक्षियों के झुंड आना- जाल में फँसना- सब का एक साथ जाल लेकर उड़ना- चूहे मित्र द्वारा जाल को काटना- पक्षियों का उड़ जाना- सीख।

१९) एक व्यापारी- गधे पर नमक बेचने ले जाना- नदी पार कर जाना- गधे का पानी में गिर जाना- उठने पर भार हलका लगना- दो-तीन बार यही क्रिया दोहराना- व्यापारी का विचार करना- गधे पर रूई लादना- फिर गधे का पानी में गिरना- उठने पर भार बढ़ जाना - सीख।

२०) एक राजा- देश-विदेश में उसकी बुध्दि की ख्याति- कश्मीर की राजकुमारी का उसके पास आना- अपने साथ फूलों की दो मालाएँ लाना- एक असली, एक नकली- हाथ लगाए बिना कौन-सी माला असली है, यह बताने के लिए कहना- राजा का खिडकियाँ खोलने का आदेश- मधुमक्खी का भीतर आना- असली माला पर बैठना- सीख।

२१) एक जंगल- खरगोश को घमंड होना- दौड़ में जीतने के लिए चुनौती देना- एक कछुए का चुनौती स्वीकार करना- रेस शुरू होना- खरगोश का बहुत आगे निकल जाना- एक पेड की छाया में सुस्ताना- जाग कर फिर भागना- कछुए का रेस जीत जाना- सीख।

२२) राकेश कक्षा दसवीं में पढ़नेवाला विद्यार्थी- सड़क पर लोगों की भीड़ देखना- भीड़ के पास जाना-

सहपाठी सोहन को ट्रक से घायल पड़े देखना- सोहन का बेहोशी में पड़ना- राकेश का सोहन को पीठ पर उठाकर दवाखाने में ले जाना- उसके लिए इन्जेक्शन ला देना- सोहन का स्वस्थ होना- मुख्याध्यापक द्वारा छात्रों के सम्मुख राकेश को सम्मानित करना।

२३) घना जंगल- एक साँप- राहगीरों को काँटना- साँप साधु की संगति में- उपदेश- "काटो मत।"- परिणाम- लोगों का साँप को ढेले मारकर सताना- साधु का दुबारा उपदेश, "फुफकारो, लेकिन काटो मत"- सीख।

प्र.२रा. **निम्नलिखित हिन्दी अवतरण का मराठी या अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए।** (१५)

१) हर तरह का प्रदूषण जीवन का शत्रु है। वायु-प्रदूषण के कारण वायुमंडल में कार्बन-डाय-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही है। इससे पृथ्वी के पर्यावरण के ऊपर रहनेवाला ओजोन गैस का सुरक्षा चक्र बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। पृथ्वी पर के तापमान के अनियमित होने से ऋतुओं का परिवर्तन-चक्र भी गड़बडा रहा है। वायु तथा जल के प्रदूषण से तरह-तरह के घातक रोग फैल रहे हैं। खेती की पैदावार नष्ट हो रही है। धरती का उपजाऊपन घट रहा है। ध्वनि-प्रदूषण के कारण मानव बहरेपन, अनिद्रा, रक्तचाप तथा मानसिक रोगों का शिकार बन रहा है। प्रदूषण से पूरी तरह मुक्त होना संभव नहीं है, पर उसे कम आवश्य किया जा सकता है। इसके लिए लोगों में जागरूकता पैदा करनी होगी। वनों के विनाश को रोकना होगा और वृक्षारोपण की प्रवृत्ति में तेजी लानी होगी।

२) गांधीजी सेवाग्राम में ऐसे एकाकी सत्याग्रही बनने की महत्त्वाकांक्षा रखते थे। जब उनसे पूछा गया, क्या आप उस गांव के किसी निवासी को अपनी कल्पना का सत्याग्रही बनाने में सफल हुए हैं ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि वे नहीं जानते, परन्तु उन्हें आशा है कि उनमें से कुछ लोग "अज्ञात रूप में ऐसे सत्याग्रही बन रहे हैं।" सेवाग्राम को अपने सपनों का आदर्श गांव बनाने के बारे में उन्होंने कहा : "मैं जानता हूँ कि यह काम उतना ही कठिन है जितना भारत को एक आदर्श देश बनाना है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति एक ही गाँव को आदर्श गाँव बना सके, तो वह न केवल सारे देश के लिए बल्कि सारी दुनिया के लिए एक नमूना पेश कर देगा। सत्य का साधक इससे बड़ी कोई आकांक्षा नहीं रखेगा।"

३) कपडे की समस्या तो उनसे भी सादी थी। गांधीजीने समझाया कि सरकार हाथ-कताई और हाथ-बुनाई की पूरी शक्ति का उपयोग करे, तो संचय करानेवाले, काला बाजार करनेवाले या मुनाफाखोर लोगों को देश की जनता को लूटने का मौका नहीं मिलेगा। इसकी सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी गई लड़ाई के दिनों में मिल चुका था। विदेशी शासकों ने खादी को शत्रुता की नजर से देखा था। यह समझ में आने जैसी बात थी। परन्तु लोकप्रिय सरकार के पास ऐसा कोई कारण नहीं हो सकता था। लेकिन गांधीजी को यह देख कर अतिशय आश्चर्य हुआ कि "कोई भी खादी की बात नहीं करता ; किसी का भी खादी की संभावना में विश्वास नहीं दिखाई देता। भारत को कपड़ा पहनाने के लिए उन्हें मिल के कपड़े के सिवा और कोई विचार ही नहीं आता।

४) पी.टी.उषा भारत की अंतरराष्ट्रीय कीर्ति प्राप्त करनेवाली धाविका है। घर में वे एक साधारण-सी युवती दिखती हैं। उनके बोलचाल और व्यवहार से सरलता टपकती है। सादगी, भोलापन और संकोच उनके स्वभाव के अंग है। इसके बावजूद आत्मविश्वास उनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। अपने लक्ष्य के प्रति उनमें गहरी निष्ठा और लगाव है। परिश्रम से वे कभी डरती नहीं है। सफलता उनके हृदय को रोमांचपूर्ण हर्ष से भर देती है, पर असफलता से वे कभी निराश नहीं होतीं। वे आज्ञाकारी हैं और नियमों के पालन में विश्वास करती हैं। नम्र और विनयशील उषा अपनी सफलता का सारा श्रेय अपने प्रशिक्षक नांबियारजी को देती हैं। अपनी जन्मभूमि से उन्हें बड़ा प्रेम है। खेल से संन्यास लेने के बाद वे देश की उभरती महिला-खिलाड़ियों की सेवा करना

चाहती हैं।

इस प्रकार पी.टी.उषा अपने उत्तम स्वभाव और गुणों के बल पर ही एक महान धाविका बन सकी हैं।

५) वृक्षारोपण हमारा एक सामाजिक कर्तव्य है। वह जीवन को स्वस्थ, सुंदर और सुखी बनाने की ही योजना है। प्रति वर्ष वनमहोत्सव मनाकर हमें इस योजना में जरूर सहयोग देना चाहिए। आज शहरों में "वृक्ष लगाओ" सप्ताह मनाया जाता है। नगरपालिकाएँ भी वृक्षारोपण के कार्यक्रम को प्रोत्साहन देती हैं। स्व.प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के जन्मदिवस पर भी वृक्षारोपण करने की परम्परा चल पड़ी है। अधिकाधिक वृक्ष लगानेवाले व्यक्ति या संस्था को "वृक्ष-मित्र" पुरस्कार भी दिया जाता है। इसमें संदेह नहीं कि देश में हरे-भरे वृक्ष जितने अधिक होंगे, हमारा जीवन भी उतना ही हरा-भरा होगा। इसलिए हमें वृक्षारोपण की प्रवृत्ति को उत्साहपूर्वक अपनाना चाहिए।

६) संपादकाचार्य बाबूराव विष्णू पराडकर का हिन्दी भाषा तथा साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी पत्रकारिता के तो आप जनक ही थे। पत्रकारिता को समृध्द करने के साथ ही उसके माध्यम से आपने राष्ट्रीय जागरण तथा चेतना का प्रसार किया। अपने मामा देउसकरजी की प्रेरणा से आप कोलकाता गए। प्रकट रुप में तो आप पत्रकारिता का कार्य करते थे पर आप का लक्ष्य था क्रांतिकारी दल में कार्य करना। आप का संबंध योगिराज अरविंद, वारींद्र घोष, रासबिहारी बसु आदि से था। सरदार भगतसिंह के साथी सहयोगी श्री.राजगुरु के तो आप काशी में अभिभावक ही थे। क्रांतिकारियों के सहयोगी होने के नाते अंग्रेजी सरकार ने सन् १९१६ में राजद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार कर अनेक वर्षों तक विभिन्न स्थानों में आपको नजरबंद रखा।

७) आज के आधुनिक युग में जहाँ "इको-फ्रेण्डली" कपास उत्पादन की चर्चा चल रही है, वहाँ रंगीन रूई का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि रंगीन रूई कार्बनिक रूई के रूप में उत्पादित करके, बिना किसी रसायनिक पदार्थ का उपयोग किए रंगीन कपड़े सरलतापूर्वक बनाए जा सकते है। इस विषय पर वैज्ञानिकों में मतभेद है कि रंगीन रूई को रंगीन रूई के रूप में उत्पादित करना चाहिए या कार्बनिक रंगीन कपास के रूप में इसकी खेती होनी चाहिए ? कुछ लोगों का कहना है कि रंगीन रूई को कार्बनिक रंगीन रूई के रूप में उत्पादित करना अधिक लाभदायक रहेगा।

८) किसी अच्छे नागरिक में बौद्धिकता, आत्मनियंत्रण और वैज्ञानिक अभिरूचि होना आवश्यक है। अपने कर्तव्यों के लिए यह आवश्यक है कि कोई भी नागरिक उपर्युक्त गुणों से टिका रहे। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने देश के प्रति वफादार और कर्तव्यपरायण हो। अच्छे नागरिक का कर्तव्य है कि वह राज्य द्वारा लगाये गए करों का भुगतान समय पर करता रहे। किसी भी नागरिक का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वह कानून का पालन करे और गैरकानूनी कार्यों के बढ़ावे को रोके। उसको देश या राज्य का समर्थन करना चाहिए ताकि शांति और व्यवस्था बनाई जा सके। उसे अपनी स्वेच्छाओं का त्याग कर देना चाहिए। उसे अपना धन, समय और आत्मज्ञान समुदाय की भलाई के लिए तैयार रखना चाहिए। शांति के समय उसे दूसरों के विकास में व्यापक रूचि लेनी चाहिए। यही अच्छे नागरिकों के गुण है।

९) ज्ञान और अनुभव का उचित मेल बिठाना जरूरी है। ज्ञान से शब्द का जरूर पता चलता है। परंतु अनुभव से उसके अर्थ का पता चलता है। दोनों ने मिलकर काम करना आज निहायत जरूरी है। जितने लोग उतनी प्रकृतियाँ होना स्वाभाविक है। परंतु आज के स्पर्धा के युग में, दूसरों का विचार जानकर और अपनी बात को अलग रखकर उद्देश्य प्राप्त करने की दृष्टि से मिलकर काम करना समय की माँग है।

मनुष्य जहाँ जन्म लेता है, वहाँ की धूल में खेलकर बड़ा हो जाता है। वहाँ से उसे स्वाभाविक प्रेम हो जाता है। वहाँ के सभी लोग उसके जाने पहचाने हो जाते हैं। लगभग सभी उनके समान भाषा बोलते हैं और सभी का रहन-सहन एक सा होता है। ऐसी दशा में वहाँ के लोगों से उसकी ममता का होना स्वाभाविक है। मनुष्य चाहे कितने ही अच्छे स्थान पर क्यों न रहने लगे, उसका मन जन्मभूमि में पहुँचने को उत्सुक रहता है। जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। जिस देश में

हमने जन्म लिया है, जिसके अन्न, जल और वायु से हमारा पालन हुआ है, उसके प्रति प्रेम की भावना का रखना हमारा कर्तव्य है। देश की उन्नति में ही हमारी उन्नति है। यदि देश गिरी दशा में होगा तो न हम अधिक दिन संपन्न रह सकते हैं और न हमारा मान हो सकता है। देश के प्रति सबको ममता की भावना रखनी चाहिए।

१०) वृक्ष सदा से ही मनुष्य के मित्र रहे हैं। उनसे मनुष्य को बहुत लाभ मिलते हैं। वे मानवजीवन के आवश्यक अंग है। इसीलिए प्राचीन काल से हमारे यहाँ "वृक्षारोपण" की बड़ी महिमा है। देश में वृक्षों का अधिक होना देशवासियों के सुख, सौभाग्य और समृद्धि की निशानी है।

वृक्षारोपण को एक पुण्य कार्य माना गया है। एक वृक्ष लगाना और उसका संरक्षण करना उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना किसी संतान को गोद लेना और उसका पालनपोषण तथा विकास करना। अग्निपुराण में तो कहा गया है कि जो वृक्ष लगाता है वह अपने तीस हजार पितरों का उद्धार करता है।

११) एक बगीचे में तरह-तरह के रंग-रूपवाले फूल खिलते हैं। हमारा देश भारत भी एक ऐसा ही बगीचा है। धर्म, भाषा, पहनावा, खान-पान आदि की दृष्टि से यहाँ विविधता दिखाई देती है। इसके बावजूद भाव और विचार की एक-ऐसी धारा भी विद्यमान है जो सारे देश को जोड़ती है। सांस्कृतिक दृष्टि से सारा भारत प्राचीनकाल से एकसूत्र में बँधा हुआ है। आजादी की लड़ाई भारत के सभी लोगों ने मिलकर लड़ी थी। आज स्वतंत्र भारत एक ही झंडे के नीचे एक राष्ट्रगीत गाता हुआ अपनी एकता और अखंडता का प्रभावशाली परिचय दे रहा है।

१२) आज रामपुर का मेला है। मेला नदी के किनारे लगा है। वहाँ एक पुराना मंदिर है। मेले में दूर-दूर से लोग आते है। कुछ बैलगाड़ियों पर और कुछ साइकिलों पर आते है। कुछ लोग पैदल भी आते हैं। लोग मेले में सज-धजकर आते हैं। उनके रंग-बिरंगे कपड़ों की शोभा देखने लायक होती है।

मेले में तरह-तरह की दुकानें लगती हैं। कहीं खिलौने बिकते हैं, तो कहीं मिठाइयाँ। कहीं कपड़े बिकते हैं, तो कहीं फल। मेले में तस्वीर खींचनेवाले भी आते हैं। मेले में कोई गुड़िया खरीदता है, तो कोई जलेबी। कोई कपड़े खरीदता है, तो कोई फल। मेले में कुछ लोग अपनी तस्वीरें खिचवाते हैं।

१३) गांधीजी को सभी जानते हैं। लोग उन्हें आदर से महात्माजी" कहते हैं। उनके प्रयत्नों से भारत स्वतंत्र हुआ। गांधीजी एक दिन में महात्मा नहीं बने। वे जीवन भर सत्य पर चलते रहे। इसीलिए वे महात्मा बन सके।

महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी है। उनका जन्म २ अक्तूबर, १८६९ को पोरबंद में हुआ। उन्होंने बचपन में "सत्य हरिश्चंद्र" नाटक देखा। नाटक देखने के बाद उन्होंने हमेशा सत्य पर चलने का निश्चय किया।

उनके बचपन की बात है। गांधीजी को पाठशाला में व्यायाम के लिए जाना था। उस दिन आकाश में बादल छाए थे। इसलिए उन्हें समय का ठीक-ठीक अंदाजा नहीं लगा। उनके पास उन दिनों घड़ी नहीं थी। जब वे पाठशाला पहुँचे, तो व्यायाम का समय समाप्त हो चुका था। उन्हें इस बात का बड़ा दुख हुआ।

जब शिक्षक ने देरी से आने का कारण पूछा, तो उन्होंने सच-सच बता दिया। फिर भी गांधीजी को देरी से आने की सजा मिली। उन्हें सजा मिलने का दुख नहीं हुआ।

१४) मेरी सरकार ने, हालही में, नई पर्यटन नीति की घोषणा की है, उससे राज्य की विपुल नैसर्गिक सुंदरता, कला, संस्कृति और इतिहास का सहारा लेकर राज्य के पर्यटन का विकास किया जा सकेगा। निजी निवेशकों को इस क्षेत्र की ओर आकर्षित करने के लिए रियायतें घोषित की गई

हैं। ग्रामीण, कृषि और साहसिक पर्यटन जैसे पर्यटन क्षेत्रों की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पुराने किलों का नवीकरण, कला एवं हस्तशिल्प ग्रामों की स्थापना, सांस्कृतिक महोत्सवों के आयोजन के साथ बॉलिवुड़ की सैर के ज़रिए मुंबई को पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनाया जायेगा। विदर्भ की असीम प्राकृतिक संपदा को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र के लिए इको-टूरीज़म प्रोजेक्ट तैयार किया गया है। नागपुर के गोरेवाड़ा में अंतरर्राष्ट्रीय स्तर का प्राणी संग्रहालय और जैविक उद्यान बनाने की कार्यवाही शुरू की जा चुकी है।

प्रश्न.३रा.(१) निम्नलिखित मराठी या अंग्रेजी अवतरण का सरल हिंदी में अनुवाद कीजिए। (१५)

1. For my mother`s 50^{th} birthday, my brothers and my sister and I pooled our resources and got her something: a ring set with pearl surrounded by a cluster of diamonds. When my oldest brother handed that ring to her at the party that was given in her honour, she opened up the velvet gift box and peered at the ring inside. Then she smiled and turned the box around so that her guests could see her special gift, and she said, "Don`t I have wonderful children? Then she passed the ring around the room, and it was a thrilling to hear the collective sigh that rippled through the room as the ring was passed from hand to hand.

2. Tibet is extremely cold in winter and extremely hot in summer. Life is hard in such a Climate. Children can endure the extreme weather by playing games. However games harden the children and enable them to endure the weather. Games makes boys and girls strong and brave. Perhaps the most popular game for girls is a shuttercock. The shuttercock is a small piece of wood with feathers upright on oneside of it. A girl has to keep it in the air by kicking it with inner side of her foot. A strong girl can keep it in the air for as long as ten minutes.

3. Most pigeons built their nests in trees. There is however one species, the rock dove, that nests on rocky cliffs or on the lower ledges and sills of buildings. There are even some pigeons known as ground doves that build their nests on the ground. Pigeons begin to look for food and water early in the morning. For part of the afternoon they rest and then look for food and water again. They return their nests by nightfall. They mostly eat fruits, grains and nuts. Sometimes they feed on insects, snails and worms. They get their food from ground or from the trees.

4. There was a yound boy named Bakri who lived in a lonely village far in the Mountains. It was a lonely village, but also very quiet and peaceful.

A swift-flowing stream tumbled down from the mountains and ran through the village. The villagers could hear the rush of its crystal clear waters as they lay in their beds at night. And then at dawn every morning they could hear another sound that also formed part of their way of life. This was the beating of a big drum in the mosque that stood across the river, and then the echoing voice from the mosque tower summoning them to morning prayers.

5. We are what we eat. The type of food we eat has both immediate and long-term effect on us, at all the three levels the body, the mind and the spirit. Food which is tamasik (i.e. stale or leftover) in nature is bound to generate strees as it tends to upset the normal functioning of human body. Fresh food, whenever available, must be preferred. Excessive use of condiments should be avoided. Taking piping hot tea/milk or steaming hot food also disturbs one`s usually calm attitude.

6. It is a mistaken belief that smoking or drinking,even in moderation, relieves stress. Simple meals with one or two food items, rather than too many lavish dishes, are advisable. Thus, vegetarian diet is preferable. Although it is customery to serve fruit with food, it is not the right thing todo. This is because different kind of digestive secretions are produced by the stomach for variant foods. Mixing up too many variety of food items at one meal creates avoidable problems for the digestive systems. In fact, any one type of fruit, preferably taken in the morning is better.

7. 'Vegetables' are important protective food and highly beneficial for the maintenance of health and prevention of disease. They contain valuable food ingredients which can be successfully utilized to build up and repair the body. Vegetables are valuable in maintaining alkaline reserve in the body. They are valued mainly for their high vitamin and mineral contents. Vitamins A,B and C are contained in vegetables in fair amounts. Faulty cooking and prolonged careless storage can, however, destroy these valuable elements. There are different kinds of vegetables. They may be edible roots, stems, leaves, fruits and seeds. Each group contributes to diet in its own way.

8. Fleshy roots are high in energy value and good sources of vitamin B group. Seeds are relatively high in carbohydrates and proteins. Leaves, stems and fruits are excellent source of minerals, vitamins, water and roughage. It is not the green vegetables only that are useful. Farinaceous

vegetables consisting of starchy roots such as potatoes, sweet potatoes, the tubers and legumes are also valuables. They are excellent sources of carbohydrates and provide energy to the body.

9. It can takes days to send mail across the country and weeks to go around the world. That is why nowadays it is referred to as `Snail-mail`. So what is e-mail? In its simplest form, e-mail is an electronic message sent from one computer to another. You can send or receive personnal and business-related messages with attachments like pictures or other documents. It`s fast, it`s easy to use and it`s cheaper than the postal route. Just as a letter or document makes stops at the different postal stations along its way, e-mail is passed from one computer to another as it travels along the network. Each computer reads the e-mail address and routes it to another computer until it eventually reaches its destination.

10. The epicenter of the entire tourism industry is a traveler or tourist. A tourist is aperson visiting a foreign country for a period of not less than 24 hours for non-employment purposes. A few decades ago, travelling was a privilege of a rich few. Today, due to the advancement in transportation and communication technology, accompanied by a rise in the standard of living, attitudes of people toward life have change. Overseas and inland holidaying has become almost possible for middle and lower middle class people. The industry broadly covers the following areas: 1. Travel agencies and tour operators. 2. Transport facilities for tourist. 3. Hotels, restaurants and tourist complexes. 4. Units providing cultural, adventurous and world life experiences to tourists.

11. Some animals have paws which are something like hands, but the human hands is very much more useful than any paw. If you look at your hand, you will notice that the thumb can touch each of the fingers. Your hand is so made that you can hold things well and do many things with it. And, of Course, hands were the first tools men had. So, using brains and hands, men slowly learned to build shelters of stone or wood or earth, to make smiple tools and weapons, and to grow food for their own use. But remember that the very first tools that they had were their hands. We still use hands as tools in many ways. For example, the potter still shapes the clay by hand. For many kind of work, however, hand are not very good. You cannot shape a piece of

wood with your hand alone. So, because men were able to think they made tools to help their hands.

12. It is an irony of history that many remarkable personalities and their brave deeds have been lost and will never be discovered. It is just like beautiful flowers withering out in the deep, dark woods. There have been many great women of medieval India who blazed a trail of glory and bravery for a short period and then flickered out suddenly. Nevertheless, they left behind their footprints on the sands of time. One such woemn of substance was Chandbibi. She was the sister of Burhan-ul-Mulk, the sultan of Ahmednagar. She acquired name and fame as the heroic defender of Ahmednagar in 1595 against the most powerful forces of the time, the army of Emperror Akbar.

13. The ryots were adversely affected for want of irrigation facilities to their farms. Hundreds of them are still suffering great hardships for lack of the said facilities. It is a universal truth that the farmers in countries where such irrigation facilities are not available to them are greatly handicapped in their agricultural operations. As they have to depend entirely on agriculture for their sustenance, providing such irrigation facilities is the only way to free them from the curse of povery. Most people are aware of the fact that ample irrigation facilities are provided to their farmers by the Government in their own country, resulting in all around improvement in the economic condition of their farming community. As such irrigation facilities were not available to the farmers in our land, agriculture, their main stay, suffered heavily.

अथवा

(२)

१) मी तळ्यात पोहत असे. स्वाभाविकपणे माझ्या आजोबांना भीती वाटायची. त्यांनी माझ्यावर नावेतून लक्ष ठेवण्यासाठी एक विलक्षण माणूस नेमला होता. त्या जुन्या खेडयातली नाव कशी होती, याची तुम्ही कल्पनाच करु शकणार नाही. तिला डोंगी म्हणत. ती नाव म्हणजे दुसरं-तिसरं काही नसून झाडाचं एक पोकळ खोड होतं. ती नाव म्हणजे काही सामान्य नाव नसते. ती गोल असते, अन् तेच धोक्याच असत. तुम्ही निष्णात असल्याखेरीज तुम्ही ती वल्हवू शकत नाही. ती कुठल्याही क्षणी गिरकी घेऊ शकते. अगदी थोडासा तोल ढळला तरी तुम्ही कायमचे संपून जाऊ शकता. ती खूप धोक्याची असते.

मी डोंगी वल्हवूनच समतोल शिकलो त्यासाठी तिच्यासारख्र उपयोगाचं दुसरं काही असणं शक्य नाही. मी मध्यममार्ग शिकलो. कारण डोंगीत तुम्हाला अस नेमकं मध्यावर असाव लागतं. जर तुम्ही चुकलात तर मग संपलातच. तुम्ही मग श्वासदेख्रील घेऊ शकत नाही अन् तुम्हाला अगदी शांत राहावं लागतं. तरच तुम्ही डोंगी वल्हवू शकता.

२) विनायकाची आई कर्नाटकातली. हावनूर येथील त्या वेळच्या गवई लोकांत चांगले माहीत असलेले बाळकृष्णबुवा यांची कन्या-वेणू. बाळकृष्णबुवांचा शंभुरावांशी परिचय होता, शंभुरावांविषयी त्यांना आदर होता. एवढेंच नव्हे, कोटेश्वराच्या मंदिरात देवापुढे ते भजनें म्हणत असत, त्यांच्या कन्येलाहि मधुर कंठ मिळालेला होता आणि अत्यंत तन्मयतेने ती गात असे. कानडी-मराठीतील असंख्य भजनें तिला मुख्रोद्गत होती. त्या वेळच्या रूढीप्रमाणे बालवयातच विवाह होऊन ती नरहरपंतांच्या घरात आली. गाण्यातून प्रकट होणारी भक्तिमयता, सेवामयता आणि अख्रंड कर्मरत राहण्याची वृत्ती या गुणांमुळे वेणूची झालेली रुक्मिणी आपल्या या नवीन घरात समरसून गेली.

३) संगणक युगात नवनवे चमत्कार वाटतील अशा गोष्टी घडत आहेत. पाच दहा वर्षात संगणक ख्रेडोपाडी येतील. लोकांना हवी ती माहिती मिळण्याची सोय तर यात होईलच. शिवाय आरोग्य शिक्षणासाठीही या संगणकांचा उपयोग होऊ शकतो. संगणक आता बोलू शकतात, काही दिवसांनी आपण बोललेले समजून घेऊन त्याला उत्तरेही देतील. हे माहितीयुग आहे. संगणक क्रांतीमुळे हे युग आत्ताच अवतरले आहे. ख्रेडयांमध्ये ते अजून दिसत नाही कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्थेची ती पायरी अद्याप आलेली नाही. या संगणक युगात आरोग्य शिक्षणच काय, पण वैद्यकीय रोगनिदान आणि उपचारांबद्दलचा सल्लाही संगणकावर मिळू शकतो. मात्र हे ख्रेडोपाडी घडायला दोन गोष्टी आवश्यक आहेत. आपली अर्थव्यवस्था संगणकवाही होईल अशी स्थिती येणे आणि दुसरे म्हणजे आपली साक्षरता आणि शिक्षण त्या पायरीला पोचणे.

४) मी पहिल्यांदा ख्रजुराहोला गेलो होतो, ते केवळ माझी आजी मी तिथे जावं म्हणून मागे लागली होती म्हणून. पण नंतर मी तिथे शेकडो वेळा गेलो आहे. जगात अशी दुसरी कुठलीही जागा नाही, जिथे मी इतक्या वेळा गेलो असेन. याच कारण सरळ आहे. तुम्ही ख्रजुराहोचा पूर्ण अनुभव घेऊच शकत नाही. त्याचा सर्वांगीण अनुभव शक्य नाही. तुम्ही जितक जास्त जाणून घेता, तितकं तुम्ही जास्त जाणू इच्छिता. ख्रजुराहोच्या मंदिरातील एकेक बारीक-सारीक गोष्ट म्हणजे रहस्य आहे. ते प्रत्येक मंदिर निर्माण करायला शेकडो वर्षे अन् हजारो कारागिर लागले असतील. अन् ख्रजुराहो शिवाय अस दुसरं काहीही मला आढळलेल नाही ज्याला उत्कृष्ट, पिरपूर्ण म्हणता येईल. ताजमहालदेख्रील असा नाही. ताजमहालात काही दोष आहेत, पण ख्रजुराहोत कुठलाच दोष नाही. फार तर ताजमहाल ही केवळ एक सुंदर शिल्पकला आहे. ख्रजुराहो म्हणजे नव्या मानवाचं सारं तत्त्वज्ञान अन् मानसशास्त्र आहे.

५) वृक्ष आपले गुरू आहेत. निस्वार्थीपणा, परोपकार, त्याग हे गुण वृक्षांपासून शिकावेत. ते आपल्या आरोग्याचीही दखल घेतात. ते आपल्या उदरभरणाची काळजी वाहतात. सर्दीपडशापासून ते कॅन्सरसारख्या रोगांवर वनस्पतीपासून औषधे मिळतात. वृक्षांची मुळे जमिनीत ओलावा धरून ठेवतात. तसेच या वृक्षवल्लींनी आपली किती काळजी घ्यावी, ह्याला काही सीमाच नाही. त्या आपल्या उदरभरणाची काळजी वाहतात. आपले घरकुल उभे करण्यात आणि ते फर्निचरने सुशोभित करण्यातही ह्यांचाच वाटा. केसात माळायला फुले देखील ह्यांचीच देणगी. एवढेच कशाला, पाण्यात बुडणाऱ्या माणसाला मिळणारा काठीचा, फळीचा आधार तोही ह्यांचाच. तात्पर्य काय? माणूस हा वृक्षाच्या आधाराशिवाय जगूच शकत नाही आणि असा हा आधारच तोडून टाकायचा? मग आपण जगायचे तरी कसे? शरीरातून हृदयच काढून टाकल्यासारखे नाही का ते? छे, छे ! असे करता कामा नये. आपल्या उपकारकर्त्यांवर असा घाला घालणे योग्य नाही. हा घाला घालण्यासाठी लागणारी कुऱ्हाड देखील लाकडाचीच ! म्हणजे वृक्ष हवाच !

६) कुष्ठरोग हा एकेकाळी बरा न होणारा आजार आधुनिक विज्ञानामुळे आता पूर्णपणे बरा होण्यासारखा आहे. याचे सध्याचे प्रमाण हजारी ३ ते ५ इतके आहे. पण प्रांतोप्रांती खूप फरक आहे. या आजाराच्या नियंत्रणासाठी "कुष्ठरोग नियंत्रण योजना" असून प्राथमिक आरोग्य केंद्रावर यासाठी कुष्ठरोग तंत्रज्ञ असतात. हे तंत्रज्ञ चांगले प्रशिक्षित असतात व चांगले उपचार देतात. तपासणी आणि उपचाराखेरीज ते घरोघरी जाऊन पाहणी करतात आणि लोकशिक्षणही करतात. त्यांच्या योजनेचे नावच "सर्वेक्षण, आरोग्य-शिक्षण आणि उपचार" असे आहे. या कुष्ठरोग तंत्रज्ञांनी अगदी नुकत्याच उमटलेल्या रोगांचा शोध घेऊन रोग्यांवर उपचार करणे सुरु आहे. पण त्यापैकी २५ टक्केच बरे होतात. हे प्रमाण सुधारले पाहिजे.

७) हे अफाट, अगाध, अचाट, अपार विश्व निर्माण करणाऱ्या ईश्वर नावाच्या शक्तीने प्रजापति नावाचे पुरुष, मातृका म्हणवणाऱ्या महिला, अर्भके इत्यादी पहिली पिढी निर्माण केली व त्यांच्यापासून पुढे मानववंश वाढत गेला. मानवाची पहिली पिढी निर्माण करण्याचा चमत्कार कसा झाला? अशी शंका घेण्याचे काहीच कारण नाही. ही सारी सृष्टीच पदोपदी चमत्कृतिपूर्ण आहे. अधांतरी फिरत रहाणारे अंतरिक्षातील अगणित ग्रहतारे, त्यांच्यातून अविरत धगधगणारा प्रकाश, सूक्ष्म, अदृश्य जीवजंतूंपासून हत्ती व देवमाशांपर्यंतचे जीवांचे अगणित अखंडित चालू असलेले जीवन-मरण हे सर्व चमत्कार सतत चालू असतात, ह्या पृथ्वीवरील जीवनात मानवास आवश्यक अशा सर्व विषयांचे ज्ञान संकलित वेद नावाचे ज्ञानभांडार त्याच ईश्वरशक्तीने मानवाच्या पहिल्या पिढीस उपलब्ध करून दिले. एवढेच नव्हे तर ते वेद पिढयान्‌पिढ्या मुखोद्‌गत म्हणू शकणारी हजारो कुलांची परंपराही निर्माण केली.

८) या वर्षी अतिवृष्टिमुळे फार मोठया प्रमाणात नुकसान झाले. या अतिवृष्टित अनेक माणसे प्राणाला मुकली व मालमत्तेचे नुकसान झाले आहे. या नुकसानीची झळ मुंबईस मोठया प्रमाणात बसली. मिठी नदीची ओळख यामुळे लोकांना झाली. मिठी नदीला पूर आल्यामुळे लोकांचे अतोनात हाल झाले. त्यातून मुंबईकरांनी

स्वत:ला अल्पावधीत सावरले. त्यांचे धैर्य अतुलनीय आहे. आपदग्रस्तांना शासनाकडून मदत देण्यात आली. त्यात घरांची पुर्नबांधणी करणे, पशुधनांची खरेदी व शेती लागवडी योग्य करणे यासाठी देण्यात येणाऱ्या अर्थसहाय्याचा समावेश होतो. मदत आणि पुनर्वसन कार्यासाठी उपाययोजना हाती घेण्यात आल्या. ज्या शेत जमिनीचे नुकसान झाले तेथे जमीन पूर्ववत करण्यासाठी शेतकऱ्यांना अर्थसहाय्य देण्यात आले. अतिवृष्टिमुळे रस्ते व पूल नादुरुस्त झाले. त्यांच्या दुरुस्तीचे कामे हाती घेण्यात आली आहेत.

९) आजपर्यत अनेक कवी, लेखक, कलावंतांनी "आई" संदर्भात कलाकृती निर्माण केली आणि ही प्रक्रिया यापुढेही चालू राहणार आहे. आई ही व्यक्ती, आई हे नातं किंवा आई हे वात्सल्य सगळचं शब्दातीत-शब्दांच्या पलीकडचे असे चरित्र आहे. आई नेहमीच कष्ठ करते. घरासाठी राबते पण तिच्यातही एक माणूस आहे, व्यक्ती आहे हे आपण विसरतो. तिलाही स्वत:ची मतं, आवडी-निवडी असतील हेच आपण विसरतो.

१०) बाजारपेठेतील व्यवहारांना प्राधान्य देणाऱ्या आर्थिक सुधारणा करताना शिक्षण, आरोग्य व इतर मूलभूत गरजांकडे लक्ष देऊन त्या पुऱ्या व्हाव्यात, यावर भर द्यायला हवा, असे अमर्त्यसेन पूर्वीपासून म्हणत आहेत. गरिबी, भूक, दुष्काळ हे सेन यांच्या अभ्यासाचे विषय आहेत. दुष्काळ हा बहुतेकदा सरकारच्या चुकीच्या धोरणांचा परिपाक असतो. अन्नधान्यांची कोठारे भरलेली असूनही लोक भुकेने बेजार राहू शकतात, याचे कारण त्यांच्याकडे ते अन्नधान्य खरेदी करण्या एवढे पैसेच नसतात, असे सेन यांनी भारतासह इतर अनेक देशांतील दुष्काळाचा अभ्यास करून सप्रमाण सिध्द केले आहे.

११) आइनस्टाइनमुळे जगाची विचार करण्याची पध्दती बदलून गेली. भौतिक शास्त्रज्ञांनीच नव्हे तर सगळ्या ज्ञान शाखांनी सापेक्षतावाद स्वीकारला. याहीपेक्षा आइनस्टाइन यांचे विज्ञान विषयक विचार मानवतावादी होते. विज्ञानामुळे जगभर शांतता नांदावी, एकमेकांचा संहार घडवून नि:पात करण्यासाठी विज्ञान नाही, हा विचार त्यांनी जगाला दिला. देशांदेशांमधील शस्त्रस्पर्धा थांबवून अवघ्या विश्वाचा कल्याणासाठी विश्व सरकारचे आइनस्टाइन आग्रही पुरस्कर्ते होते. त्यांच्या मानवतावादी पैलूंमुळे आइनस्टाइनचं स्थान आजही अढळ राहिलय.

१२) कोणतेही काम नीट व्हावयाचे म्हटल्यास त्याला तीन गोष्टींची जरूर असते. पहिली गोष्ट म्हणजे त्या कामातला संपूर्ण वेग साधला पाहिजे. परीक्षेसाठी प्रश्न विचारले जातात. त्यांची उत्तरे ठरलेल्या वेळेच्या आत लिहून झाली पाहिजेत असा नियम असतो. ह्यात महत्त्वाचा मुद्दा आहे. अमुक मैल कूच करून जावयाचे आहे, एवढाच प्रश्न लष्करापुढे नसतो. पण अमुक वेळेच्या आत अमुक मैल जावयाचे आहे असा मुदतबंदीचा प्रश्न लष्करापुढे असतो. जी गोष्ट लष्कराची तीच कमीजास्त प्रमाणात व्यवहारातल्या सर्व उद्योगांना लागू आहे. रसोई करणारा मनुष्य रसोई चांगली करतो पण पांच माणसांची रसोई बनविण्याला त्याला पांच तास लागतात,

तर त्याचे रसोई बनवणे निरूपयोगी आहे. काळाच्या प्रवाहात मनुष्य सापडलेला असल्यामुळे त्याला सर्व कामे ह्या प्रवाहाचे धोरण सांभाळून करायची असतात. म्हणून वेग साधणे हा कामातला एक आवश्यक मुद्दा ठरतो.

प्रश्न ४ था. निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए। **(१५)**

१. प्रेम/प्रेमा पालका, २०३, शिवगंगा नगर, भायंदर से अपने मित्र/सहेली को अपने जन्मदिन पर आमंत्रित करता है/करती है।

२. युवराज/यामिनी ठाकुर, रेशन बाग, नागपुर से व्यवस्थापक, प्रज्ञा पुस्तक भंडार, नागपुर को "पंचतंत्र" की पांच प्रतियाँ मंगवाने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

३. निधीश/प्रहलाद पाठक, १६०, अंबे माँ हा. सोसायटी, भायंदर से अपने मित्र/सहेली को उसके जन्मदिन पर बधाई संदेश एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता/करती है।

४. मंगेश/मानसी वैद्य, १०९ शिवाजी नगर, पुणे से पुणे महानगरपालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर अपने मुहल्ले की गंदगी को दूर करने की प्रार्थना करता/करती है।

५. विभा/पुनीत शर्मा, २०१, गोल्डन पार्क, कल्याण (पश्चिम) से अपने मोहल्ले में हो रहे अत्यधिक भार नियमन (लोड शेडिंग) के संदर्भ में शिकायत पत्र मुख्य अभियंता, कल्याण डोंबिवली महानगरपालिका, कल्याण को लिखता/लिखती है।

६. विशाल/वैशाली जाधव, ८१, सोमवार पेठ, सिन्नर से व्यवस्थापक, महाराष्ट्र टी. वी. सेंटर, नासिक रोड़, नासिक को टी.वी. बिगड़ जाने के कारण पत्र लिखता/लिखती है।

७. अनंत/अनिता चौधरी, १०३, तुलसीबाग, पुणे-४११००२ से प्रधानाध्यापक, माधव विद्यालय, लक्ष्मी रोड़, पुणे को पत्र लिखकर अपने छोट भाई का मासिक शुल्क अगले माह जमा कराने की अनुमति देने के लिए पत्र लिखता/लिखती है।

८. उमा/उमेश शर्मा, शास्त्री नगर, अमरावती से स्वास्थ्य अधिकारी, महानगरपालिका, अमरावती को शहर में अशुध्द जल की आपूर्ति होने के बारे में ध्यान आकर्षित करते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

९. महेश/माया चौधरी, विद्यानगर, जलगाँव से व्यवस्थापक, प्रकाश बुक डिपो, पुणे के नाम पत्र लिखकर मँगवाई गई पुस्तकों की कम प्रतियाँ तथा दो फटी हुई पुस्तकें प्राप्त होने के बारे में शिकायत करता/करती है।

१०. ४४१, रविवार पेठ, नासिक से मयूर/मयूरी देशपांडे, व्यवस्थापक, विनस प्रकाशन, पुणे-२ को पत्र लिखकर हिंदी की कुछ पुस्तकें मंगवाता/मँगवाती है।

११. प्रभाकर/प्रमिला पाटील, महात्मा गांधी मार्ग, नासिक से मुख्याध्यापक, सोमैय्या कन्या विद्यालय, मनमाड, जिला नासिक को अपनी छोटी बहन को पाँचवी कक्षा में प्रवेश दिलाने के लिए प्रार्थना पत्र लिखता/लिखती है।

१२. रमेश/रमा कुलकर्णी, ४२५ जवाहर चौक, परभणी से अपना परीक्षा शुल्क माफ करने की प्रार्थना करते हुए शासकीय विद्यालय, परभणी के प्रधानाध्यापक को पत्र लिखता/लिखती है।

१३. वर्धा से संजय/सरोज पाठक, वर्धा नगरपालिका के नगराध्यक्ष को वार्ड नं. ३२ की सफाई करवाने के लिए शिकायती पत्र लिखता/लिखती है।

१४. आनंद/अर्चना देसाई, इंदिरा पथ, नागपुर से विभागीय सचिव, महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल, औरंगाबाद को लिपिक की नौकरी के लिए आवेदन पत्र लिखता/लिखती है।

१५. वंदन/वंदना तांबे, ३५, गांधी चौक, सतारा से प्रधानाध्यापक, नेताजी विद्यालय, राजपथ, सतारा को बडी बहन के विवाह के कारण पाँच दिनों की छुट्टी के लिए आवेदन पत्र लिखता/लिखती है।

१६. ३० अ, राजेंद्रनगर लातूर से नंदकुमार/नंदिता परमार प्रसन्न ट्रेवल्स कंपनी के लातूर स्थित कार्यालय के व्यवस्थापक के नाम पत्र लिखकर "महाबलेश्वर-प्रतापगढ" यात्रा के लिए आवश्यक मार्गदर्शन करने के लिए विंनती करता/करती है।

१७. १०५, गांधीनगर, नागपुर से शरद/शारदा दुबे, कोल्हापुर निवासी अपने मित्र/सहेली को अपनी पाठशाला में मनाए गए "वन-महोत्सव"का वर्णन करते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

१८. विनय/वंदना सावंत अपने औरंगाबाद निवासी छोटे भाई को जीवन में समय के सदुपयोग का महत्त्व समझाते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

१९. शांतिकुटीर, गांधीनगर, सोलापुर से उमेश/उमा पाटील अपने आलसी मित्र/सहेली को 'आलस्य अवनति का मूल है' यह समझाते हुए आलस्य त्यागने की सलाह देते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

२०. अपने शहर में अशुध्द जल के कारण बढ़ती बीमारी की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए स्वास्थ्य विभाग अधिकारी, नगर परिषद के नाम अनिल/अनिता कदम, मनमाड़ से पत्र लिखता/लिखती है।

२१. राजन/राजश्री सेवलकर, ८१५ 'स्नेह सदन' अमरावती से अपने मित्र/सहेली सुधांशु/सुषमा जोशी, ३९९ 'स्वीट होम' नासिक को पत्र लिखकर शालांत परीक्षा में प्रथम श्रेणी पाने के उपलक्ष्य में बधाई पत्र लिखता/लिखती है।

२२. दीपा/दीपेश श्रीवास्तव, ३०२, नेहरू नगर, नासिक से अपनी सहेली/मित्र विनिता/विजय देशपांडे 'एफ' ब्लाक, आनंद नगर पूना को अपने बड़े भाई के विवाह में आमंत्रित करती/करता है।

२३. संतोष/सरोज, २०५ शिवाजी नगर, सांगली से मुख्य कार्यपालन अधिकारी, नगर परिषद सांगली को पत्र लिखकर मुहल्ले में अनियमित जलपूर्ति से होनेवाली असुविधा के संबंध में शिकायत करता/करती है।

२४. प्रवीण/प्रमीला देसाई, 'पंचवटी' लोकमान्य तिलक रोड़, नासिक को राज्यस्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर, रमेश/रमा शाह अकोला से बधाई पत्र लिखता/लिखती है।

२५. संतोष/संगीता पाटील, ४०, सोमवार पेठ, कोल्हापुर से परीक्षा में अनुतीर्ण हुए एक निराश मित्र/सहेली को पत्र लिखकर पढाई जारी रखने की प्रेरणा देता/देती है।

प्रश्न ५वा. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं सात शब्दों के लिए अंग्रेजी पर्यायी शब्द लिखिए। (७)

१	कार्यालय- अधीक्षक	५१	श्रमिक संघ
२	पुलिस महानिरीक्षक	५२	श्रम आयुक्त
३	हस्तांतर-पत्र	५३	वचनभंग
४	कुलाधिपति	५४	वन-भूमि
५	भारतीय मानक समय	५५	मरम्मत
६	नियत तारीख	५६	प्रारंभिक जांच
७	पूंजीगत लागत	५७	बंजर भूमि
८	सभापति	५८	देशी भाषा
९	अभिलेखक	५९	डाक मोटर सेना
१०	प्रशासनिक विभाग	६०	व्दारपाल
११	आपसी करार	६१	अभिदायी भविष्य निधि
१२	अस्थायी	६२	वाहन भत्ता
१३	उत्पादन शुल्क	६३	सकल राशि
१४	उप-नियम	६४	अध्यक्ष
१५	हिंसा	६५	प्रादेशिक भाषा
१६	हस्तलेख विशेषज्ञ	६६	न्यायालय फीस

१७	सार्वजनिक पुस्तकालय	६७	कंपन
१८	सेवा-समाप्ति	६८	ऐतिहासिक महत्व
१९	शासकीय अभिलेख	६९	जंगम संपत्ति
२०	मुख्य सचिव	७०	जनगणना
२१	कार्यशाला	७१	वैज्ञानिक अनुसंधान
२२	कार्यवाही	७२	मुख्य श्रम आयुक्त
२३	सत्यापन	७३	यातायात संकेत
२४	विशेषाधिकार	७४	परिवीक्षा अधिकारी
२५	वरिष्ठता	७५	नीलाम करना
२६	प्राथमिकता	७६	न्याय संगत आधार
२७	आरक्षण	७७	डकैती
२८	प्रभारी	७८	तद्धीन
२९	संस्तुति	७९	चाय बगान
३०	आद्याक्षर	८०	वैयक्तिक बीमा
३१	परिपत्र	८१	भोजनालय
३२	पदावधि	८२	न्यास
३३	निगम	८३	प्रसाधन
३४	कार्मिक विभाग	८४	प्रस्ताव
३५	परिचालन	८५	खुदरा व्यापारी
३६	निवारक-सेवा	८६	थलसेना
३७	पूर्व अनुमोदन	८७	वायुसेना
३८	प्रभुत्व	८८	अत्यावश्यक सामग्री
३९	बाजार मूल्य	८९	अधिकारिता
४०	न्यायिक अभिलेख	९०	सत्र न्यायाधीश
४१	नमक का कारखाना	९१	विवरण पत्रिका
४२	व्दारपाल	९२	संकाय
४३	चिडियाघर	९३	धमकी
४४	छात्रावास	९४	प्रश्नावली
४५	असहमति	९५	प्राधिकारी
४६	आदेश निकालना	९६	प्रादेशिक

४७	भत्ता	९७	यात्री किराया
४८	बैंक नोट	९८	अपर सचिव
४९	बहुसंख्या	९९	नियम
५०	बहुमत	१००	अधिनियम

प्रश्न ६ ठा. निम्नलिखित शब्दों में से किन्ही आठ शब्दों के लिए हिंदी पर्यायी शब्द लिखिए । (८)

1	Legal Advice	51	Memorandum
2	Statement	52	Internal Audit
3	Station Master	53	Balance Sheet
4	Head Constable	54	Custom Duty
5	National Integration	55	Sales Tax
6	Civil Offence	56	Insurance Agent
7	Underground	57	Octroi
8	Post Graduate Course	58	Civil Surgeon
9	Provision	59	Failure
10	No Objection Certificate	60	Disagreement
11	Contigency fund	61	Family Pension Fund
12	Fracture	62	Factory Manager
13	Superme Court	63	Penal code
14	Judge of High Court	64	Gate Keeper
15	Hijacking	65	Mayor of Corporation
16	Collectively	66	Deposite Certificate
17	Public Gambling	67	Regulatory
18	Retirement	68	Consolidated Fund
19	Penalty	69	Democracy
20	Printing	70	Exchange
21	Assessing Officer	71	Warranty
22	Central Stores Department	72	Mortgage
23	Postal Life Insurance	73	Dividend
24	Share Capital	74	Honorarium

25	Directorate	75	Allotment
26	Incentive	76	Disposal
27	Remarks	77	Adjourment
28	Surcharge	78	Contributory Provident Fund
29	Validity of Certificate	79	Conveyance Allowance
30	Written Instrument	80	Gross Pay
31	Account	81	Forwarding letter
32	Tenure	82	Monetary Loss
33	Certificate	83	Notification
34	Notification	84	Monopoly
35	Mission	85	Stock-Book
36	Imprest Money	86	Purpose
37	Rules	87	Slipulation
38	Deduction	88	Historical
39	Market-Value	89	Cultural Pearl
40	Blank cheque	90	Fault
41	Advocate General	91	Life-Saving
42	Criterion	92	Agreement in Writing
43	Formal	93	Small Scale Industry
44	Creche	94	Disagreement
45	Handicraft	95	Faliure
46	Hostel	96	Penal Code
47	Prescribed	97	Money-holder
48	Appropriate	98	Broker
49	Assessment	99	Allotment
50	Endorsement	100	Act

प्रश्न ७ वा. निम्नलिखित गद्यखंड का एक - तिहाई सार लिखिए अथवा गद्यखंड के निचे दिए (२०)

गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए। सार को उचित शीर्षक दीजिए।

(१) यह बात सभी जानते हैं कि विश्व के १८५ देशों में इंग्लैड केवल ६ देशों की ही सरकारी भाषा अंग्रेजी है, जो विगत अंग्रेजी साम्राज्य के अंतर्गत रहे थे , जबकि बिना अंग्रेजीवाले राष्ट्र अपनी भाषाओं के बल पर बराबर प्रगति कर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी ख्याति बढ़ा रहे हैं। परंतु दुर्भाग्यवश कतिपय स्वार्थी लोगों ने सरकार में बैठे

नेताओं को सदैव अपने स्वार्थों की ख़ातिर राष्ट्रभाषा को उसका जायज हक पाने से रोका और ऐसे लोग आज भी कम ताकतवर नहीं है। हिंदी का प्रमुख विरोध दक्षिण भारत में अब तक अधिक हुआ है। तमिलनाडू आदि राज्य अपनी राज्य प्रादेशिक भाषाओं में ही कामकाज करते है परंतु जब भी कभी हिंदी की बात उठती है तो वे उसके रास्ते में हमेशा रुकावट ड़ालते चले आ रहे हैं । यह भी एक वास्तविकता है कि यदि कभी हिंदी का बोलबाला हो जाये और वह राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो जाये तो अखिल भारतीय सेवाओं में उन्हीं का वर्चस्व कायम रह सके।

प्रश्न :

(१) विश्वस्तर पर अंग्रेजी भाषा की क्या स्थिति है? (४)
(२) हमारे देश में किस भाषा को अपनाया गया है? (४)
(३) कौन से लोग राष्ट्रभाषा के विकास में बाधक बने है? (४)
(४) दक्षिण भारत में हिंदी का विरोध क्यों करते हैं? (२)
(५) यदि हिंदी राष्ट्रभाषा हो जाये तो क्या होगा? (२)
(६) हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रति आपकी क्या राय है? (२)
(७) इस गदयखंड़ के लिए उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(२)

हमारे देश में धर्मो- सम्प्रदायों के अनेक उपासना - गृह, मंदिर मस्जिद, गिरजाघर और गुरुव्दारे हैं। सभी शांति चाहते हैं, पर शांति का दर्शन कहीं होता नहीं। हर जगह कोई-न-कोई आंदोलन छिड़ा है। पत्थर, सीमेंट, गारे - चूने से बने इस भव्य , पवित्र स्थानो से मनुष्य की नैतिकता को कोई बल क्यों नहीं मिलता? जरूरत इस बात की है कि इन धार्मिक स्थानों से नैतिकता और शांति को संदेश प्रसारित हो इन स्थानों में परंपरागत पुजारियों की जगह गणमान्य विव्दान हों, जो हमारे मन को शांति दें और उसमें एक विशेष आस्था का संचार करें। हमें आज धार्मिक क्षेत्र में आवश्यकता है वैचारिक क्रांति की, सत्साहित्य की, एवं चरित्र निर्माण की।

प्रश्न:

(१) हमारे देश में धर्म और सम्प्रदायों की क्या स्थिति है? (४)
(२) हमारे देश में कौन-कौन से धार्मिक स्थान है? (४)
(३) आज पवित्र धार्मिक स्थानों में किस बात की कमी है? (४)
(४) आज धार्मिक स्थानों से हमारी क्या अपेक्षाएँ है? (२)
(५) आज धार्मिक क्षेत्र में हमें किन बातों की आवश्यकता है? (२)
(६) हर जगह आंदोलन क्यों छिड़ा हुआ है? (२)
(७) गद्य - खंड के लिए उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(३)

दान देने की परिपाटी प्राचीन काल से चली आ रही है। अन्नदान, गौदान, वस्त्रदान, सुवर्णदान, भूमिदान करना भारतीय अपना परम धर्म मानते हैं। धर्म से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। प्राचीन काल में विद्यादान को सर्वश्रेष्ठ दान माना जाता था। वर्तमान काल में कुछ नए प्रकार के दान प्रचलित हैं। नेत्रदान, रक्तदान, किडनीदान। रक्त तो हर व्यक्ति के लिए जरूरी है। पचास वर्ष के निरोगी स्त्री-पुरुष रक्तदान कर सकते हैं। दुर्घटनाओं से परिपूर्ण वैज्ञानिक युग में रक्तदान सर्वश्रेष्ठ दान माना जा रहा है। नेत्रदान करने से घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि मरणोपरांत ही आँखें निकालकर , अंधों को दी जाती हैं और वे देखने लगते हैं। बीमार के प्राण बचाने के लिए हम अपनी किड़नी दान दे सकते हैं।

प्रश्न:

(१) भारतीय लोग किसे अपना धर्म मानते हैं? (४)

(२) प्राचीन काल से लेकर अब तक कौन-कौन से दान प्रचलित हैं? (४)

(३) किन लोगों को रक्तदान करना चाहिए? (४)

(४) वैज्ञानिक युग में कौन सा दान श्रेष्ठ है? (२)

(५) नेत्रदान करने से घबराने की क्यों आवश्यकता नहीं हैं? (२)

(६) बीमार के प्राण बचाने के लिए हम क्या दान कर सकते है? (२)

(७) इस गद्यखंड़ को उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(४)

विद्यार्थी के लिए शिक्षक ही उसका आदर्श होता है, लेकिन भीड़भरी कक्षाओं में शिक्षक के लिए यह संभव नहीं हो पाता कि वह अपने विद्यार्थी और उसकी समस्याओं को व्यक्तिगत रूप से जान सके।कार्य में अत्यधिक बोझ और शिक्षा पदधति की औपचारिकताओं को पूरा करने में ही उसकी संपूर्ण शक्ति और समय समाप्त हो जाता है। विदयार्थी केवल इस कुंठा से ही ग्रसित नहीं रहते कि उनका शिक्षक उनका नाम तक नहीं जानता, बल्कि अपनी संपूर्ण असुविधाओं का कारण भी शिक्षकों की उदासीनता ही समझते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में संपूर्ण देश के लिए कोई समान नीति न होने से भी विद्यार्थियों के आक्रोश में वृद्धि होती है। वर्तमान शिक्षा नौकरशाही बाबू तैयार करती है। लेकिन जब अपनी आयु का आधा भाग डिग्री के पश्चात दर-दर भटकने के बाद भी उसे कहीं रोजगार प्राप्त नहीं होता तो वह उग्र रूप धारण करता है।

प्रश्न:

(१) विद्याथियों के लिए उसका आदर्श कौन होता है? (४)

(२) शिक्षक विद्यार्थियों की ओर व्यक्तिगत रूप से क्यों ध्यान नही दे पाता है? (४)

(३) शिक्षक की सारी शक्ति किस बात में समाप्त हो जाती है? (४)

(४) डिग्री प्राप्त विद्यार्थी आज उग्र रूप क्यों धारण कर रहा है? (२)

(५) विद्यार्थी के आक्रोश में वृद्धि कयों होती है? (२)

(६) वर्तमान शिक्षा- प्रणाली में क्या दोष हैं? (२)

(७) गद्यखंड के लिए उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(५)

किसी अच्छे नागरिक में बौद्धिकता, आत्मनियंत्रण और वैज्ञानिक अभिरुचि होना आवश्यक है।अपने कर्तव्यों के लिए यह आवश्यक है कि कोई भी नागरिक उपर्युक्त गुणों से टिका रहे। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है वह अपने देश के प्रति वफादार और कर्तव्यपरायण हो। अच्छे नागरिक का कर्तव्य है कि वह राज्य द्वारा लगाये गए करों का भुगतान समय पर करता रहे। किसी भी नागरिक का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वह कानून का पालन करे और गैरकानूनी कार्यो के बढ़ावे को रोके। उसको देश या राज्य का समर्थन करना चाहिए ताकि शांति और व्यवस्था बनाई जा सके। उसे अपनी स्वेच्छाओं का त्याग कर देना चाहिए। उसे अपना धन, समय और आत्मज्ञान समुदाय की भलाई के लिए तैयार रखना चाहिए। शांति के समय उसे दूसरों के विकास में व्यापक रुचि लेनी चाहिए। यही अच्छे नागरिकों के गुण हैं।

प्रश्न:

(१) अच्छे नागरिक में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? (४)

(२) प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य क्या है? (४)

(३) नागरिक का प्राथमिक कर्तव्य क्या है? (४)

(४) अच्छा नागरिक समय पर क्या करता रहे? (२)

(५) शांति के समय में नागरिक को क्या करना चाहिए? (२)

(६) समुदाय की भलाई के लिए नागरिक को क्या तैयार रखना चाहिए? (२)
(७) इस गद्यखंड के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(६)

किसी भी देश या काल के लिए जवान तथा शिक्षक दोनों ही महत्त्वपूर्ण है। किसी एक के बिना समाज सुरक्षित नहीं रह सकता। दोनों ही समाज के रक्षक हैं, किंतु उनके कार्यो में भिन्नता दिखाई पड़ती है। एक शत्रु से रक्षा करता है, तो दूसरा उसे (देश को) समृद्ध बनाता है। फिर भी शिक्षक का उत्तरदायित्व जवान से कहीं बढ़कर है । भावी नागरिक निर्माण करने की जिम्मेदरी शिक्षक के ऊपर है। वह उसके शारीरिक , मानसिक तथा नैतिक विकास का जनक है, जिस पर व्यक्ति , समाज तथा राष्ट्र निर्भर है। आज शिक्षक के ही द्वारा कोई योग्य सैनिक बन सकता है।आज शिक्षक ने सैनिक धाराओं में क्रांति पैदा कर दी है। हमारे अहिंसक आंदोलन ने दुनिया को दिखा दिया है कि शिक्षक सैनिक से कहीं श्रेष्ठ है। उसे बनावटी शस्त्रों की जरूरत नहीं है। इसका आत्मिक बल सब शस्त्रों से बड़ा है। अगर आनेवाली दुनिया इसका अनुकरण करे तो शस्त्रीकरण का नामोनिशान भूपृष्ठ से उठ जाए। नैतिक शक्ति का बोलबाला हो, सारी दुनिया में एकात्मता की लहर फैले और तब ज्ञान-विज्ञान का निर्माण विकास के लिए हो, न कि विनाश के लिए।
प्रश्न:
(१) समाज की सुरक्षा किस पर निर्भर है? (४)
(२) शिक्षक तथा जवान समाज में क्या महत्त्व रखते है? (४)
(३) शिक्षक पर कौन-सी जिम्मेदारी है? (४)
(४) शिक्षक का शस्त्र कौन-सा है? (२)
(५) उस शस्त्र का अनुसरण करने से क्या लाभ होगा? (२)
(६) हमारे अहिंसक आंदोलन ने दुनिया को क्या दिखा दिया है? (२)
(७) इस गद्यखंड़ के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(७)

मनुष्य जहाँ जन्म लेता है, वहाँ की धूल में खेलकर बड़ा होता है। वहाँ से उसे स्वाभाविक प्रेम हो जाता है। वहाँ के सभी लोग उसके जाने- पहचाने हो जाते हैं। लगभग सभी उसके समान भाषा बोलते हैं और सभी का रहन - सहन एक सा होता है। ऐसी दशा में वहाँ के लोगोंसे उसकी ममता का होना स्वाभाविक है। मनुष्य चाहे कितने ही अच्छे स्थान पर क्यों न रहने लगे, उसका मन जन्मभूमि में पहुँचने को उत्सुक रहता है। जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। जिस देश में हमने जन्म लिया है, जिसके अन्न ,जल और वायु से हमारा पालन हुआ है, उसके प्रति प्रेम की भावना का रखना हमारा कर्तव्य है। देश की उन्नति में ही हमारी उन्नति है। यदि देश गिरी दशा में होगा तो न हम अधिक दिन संपन्न रह सकते हैं और न हमारा मान हो सकता है। देश के प्रति सबको ममता की भावना रखनी चाहिए।

(१) मनुष्य को जन्मभूमि से स्वाभाविक प्रेम क्यों होता है? (४)
(२) अपनी जन्मभूमि के प्रति कौन-सी भावना रखना हमारा कर्तव्य है? (४)
(३) स्वर्ग से भी श्रेष्ठ किसे कहा गया है? (४)
(४) हमारी उन्नति किसमें निहित है? (२)
(५) यदि हमारा देश गिरी दशा में होगा तो हमारी स्थिति क्या हो जाएगा? (२)
(६) देश के प्रति हम सबको कौन - सी भावना रखनी चाहिए? (२)
(७) गद्य - खंड़ के लिए उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(८)

भारतीय जनता से मुझे इतना प्रेम और स्नेह मिला है कि मैं, चाहे जो भी कुछ क्यों न करूँ, उसके अल्पांश का भी बदला नहीं चुका सकता। सच तो यह है कि प्रेम जैसी अमूल्य वस्तु का बदला चुकाया ही नहीं जा सकता। मैं तो केवल यह आशा कर सकता हूँ कि जितने दिन मैं और जीवित रहूँ, अपने देशवासियों के और उनके प्यार के योग्य बना रहूँ। मेरी इच्छा है कि मरने के बाद मेरा दाह-संस्कार कर दिया जाए। यदि मैं विदेश में मरूँ तो दाह-संस्कार वहीं कर दिया जाए ओर मेरी भस्म प्रयाग भेज दी जाए। भस्म की एक मुट्ठी गंगा में प्रवाहित कर दी जाए।भस्म का शेष भाग, विमान व्दारा ऊपर से, खेतों पर बिखेर दिया जाए, जहाँ भारत के किसान अपना पसीना बहाते हैं, ताकि वह भस्म भारत की धूल और मिट्टी में मिलकर भारत का अभिन्न अंग बन जाए।

गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है। लोगों की उस पर अपार श्रध्दा है। उसके साथ भारत की जातीय स्मृतियाँ, उसकी आशाएँ और उसके विजय-गीत जुड़े हुए हैं। युगों पुरानी भारतीय संस्कृति-सभ्यता की प्रतीक रही है यह गंगा, जो अनादि काल से बहती चली आ रही है,फिर भी बनी हुई है गंगा की गंगा।

प्रश्न:

(१) लेखक के मन में भारतीय जनता के प्रति कैसी भावना है? (४)

(२) नेहरूजी ने अपने अंतिम संस्कार के बारे में क्या इच्छा प्रकट की है? (४)

(३) उन्होंने अपनी भस्म के विषय में क्या लिखा है? (४)

(४) नेहरूजी केवल क्या आशा कर सकते है? (२)

(५) नेहरूजी अपनी भस्म खेतों में क्यों बिखेर देना चाहते है? (२)

(६) गंगा के प्रति लेखक की क्या भावना है? (२)

(७) गद्य-खंड़ के लिए उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(९)

कुमार रणजीत सिंह को भारतीय क्रिकेट का जादूगार कहा जाता है और उन्हें भारत का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माना जाता है। उसका जन्म १० सितम्बर, १८७५ को जामनगर के पास एक गाँव में हुआ। रणजी इस छोटे से नाम से क्रिकेट की दुनिया में मशहूर बने। अपनी बल्लेबाजी से उन्होंने क्रिकेट के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया । उस अद्‌भुत बल्लेबाजी का रहस्य कोई नहीं जान सका। एक समीक्षक एस.ए.गोविंदराजन ने उन्हें क्रिकेट का सम्राट कहा। उनकी रन बटोरने की कला से प्रभावित होकर किसी ने उन्हें उदारतापूर्वक सिक्कों की बौछार करनेवाले करोड़पति सेठ की उपमा दी। रणजी जीवनभर अविवाहित रहे। जब-जब भी विवाह का प्रसंग आता तब-तब वह मजाक -मजाक में कहते कि क्रिकेट ही मेरी जीवनसंगिनी है। अपने विद्यार्थीजीवन में उन्होंने एक कविता लिखी थी जिससे उनकी खेल, खिलाड़ी और खेल में होनेवाली हार-जीत के बारे में आदर्श विचारधारा का परिचय मिलता है। २ एप्रैल, १९३३ के दिन उनकी मृत्यु हुई। भारत में उनकी स्मृति में हर साल रणजी ट्राफी प्रतियोगिता आयोजित की जाती है।

प्रश्न:

(१) रणजीत सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ? (४)

(२) रणजीत सिंह की रन बटोरने की कला से प्रभावित होकर उन्हें कौन-सी उपमा दी गई? (४)

(३) भारत में रणजीत सिंह की स्मृति किस तरह मनाई जाती है? (४)

(४) रणजीत सिंह की जीवनसंगिनी कौन थी? (२)

(५) अपनी लिखी एक कविता में रणजीत सिंह ने कौन- से विचार व्यक्त किए है? (२)

(६) एस.ए.गोविंदराजन ने रणजीत सिंह के बारे में क्या कहा है? (२)

(७) गद्य-खंड़ के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(१०)

हमारे पूर्वजों ने स्त्री का बड़ा महत्व माना है। उन्होंने स्त्री को धार्मिक कार्यो में अग्रस्थान दिया है और उसकी बड़ी प्रशंसा की है। वे मानते थे कि जिस घर में विदुषी नारी होती है, वहाँ के नर-नारी सद्‌गुणों से विभूषित हो जाते हैं। इसीलिए तो मनु ने कहा है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता " अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। स्त्री तो घर की रानी है। उसका प्रभाव बच्चों पर सबसे ज्यादा होता है। बचपन में बालकों पर गहरे संस्कार पड़ते हैं, वे हमेशा के लिए रह जाते हैं। इस प्रकार स्त्री के कारण मानवसमाज ने उन्नति की हैं।स्त्री ही दुनिया में बडे-बडे महापुरुष पैदा करती है। मानवसमाज की उन्नति में उसका जितना हाथ है उतना किसी और का नहीं है। उसकी प्रेरणा से संसार में मनुष्य-रत्न पैदा होते हैं और मानवसमाज को उन्नति के पथ पर ले जाती है।

प्रश्न:

(१) हमारे पूर्वजों ने स्त्री को क्या महत्त्व दिया है? (४)

(२) मनु ने नारी की महत्ता को किस उँचाई तक पहुँचाया है? (४)

(३) बालकों के जीवन -निर्माण में स्त्री का क्या योगदान होता है? (४)

(४) मानवसमाज की उन्नति में नारी का क्या योगदान है? (२)

(५) संसार में किसकी प्रेरणा से मनुष्य-रत्न पैदा होते हैं? (२)

(६) मानव समाज को उन्नति के पथ पर कौन ले जाता है? (२)

(७) गद्य-खंड़ के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(११)

भरत के चरित्र को तुलसीदास बाहर से नहीं, भीतर से संवारते हैं, उसे बड़ी सहजता और स्वाभाविकता से उभारते हैं। जैसे राम का नामस्मरण सुखदायी है, उसी तरह भरत का नाम पवित्र बनानेवाला है। इसका कारण साफ है, भरत राम को प्राणों से भी प्रिय हैं। जिसे राम प्रिय हो वह महान बन जाता है, किंतु जो राम को प्रिय हो उसकी महानता का कहना ही क्या? भरत में दोनों गुण घुले-मिले हैं। राम तो उन्हें प्रेम करते ही हैं, साथ ही साथ भरत भी राम से प्रेम करते हैं। जो राम को प्रिय हो या जिसे राम प्रिय हो, उस पर कोई आक्षेप लगाना या उसके बारे में कुछ अनुचित बोलना राम का अपमान होगा। इससे सत्कर्म तो नष्ट होंगे ही, पाप भी बढेगा। धर्म का मूलाधार यह है कि जब भक्त प्रभुमय हो जाता है तब उसके संपूर्ण चरित्र में प्रभुता प्रकाशित हो उठती है।

प्रश्न :

(१) भरत में कौन से गुण घुले मिले हैं? (४)

(२) भरत के चरित्र को तुलसीदास जी ने कैसे उभारा है? (४)

(३) तुलसीदास जी भरत के नाम के बारे में क्या कहते हैं? (४)

(४) धर्म का मूलाधार क्या है? (२)

(५) राम का अपमान कब होगा? (२)

(६) सत्कर्म किस प्रकार नष्ट होंगे? (२)

(७) इस गद्य-खंड़ को उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(१२)

इस युग में पुस्तकों के महत्व से कौन परिचित नहीं है? पुस्तकें सरस्वती का वरदान हैं। ज्ञान-विज्ञान की अक्षुण्ण-निधि उन्हीं के कलेवर में बन्द रहती है। हमारे पूर्वजों की संचित ज्ञान-राशि उन्हींके माध्यम से हम

तक पहुँचती हैं। पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र हैं, जो दु:ख में हमें ढाढ़स बँधाती और सुख में हमें हर्षित करती हैं। उनके इसी महत्व को लक्षित करते हुए तो ऑस्टिन फिलिप्स ने कहा था, " पुराने कपड़े पहनकर भी नयी किताबें खरीदिए।"

सर्वसाधारण भारतीय तो नयी-नयी पुस्तकें खरीदने के शौकीन न होते। हाँ, विद्यार्थी-समाज को अपने पाठ्यक्रम-निर्धारित पुस्तकें अवश्य खरीदनी पड़ती किन्तु खेद का विषय है कि हमारे आज के विद्यार्थियो को अपनी पुस्तकें सँभाल कर रखना नहीं आता। कक्षा में पढ़ने के लिए जब कभी विद्यार्थियों से पुस्तकें ली जाती हैं, तब किसी के पन्ने-नदारद , कोई मैली-कुचैली है, तो किसी पर ज्यामिती की नानाविध आकृतियों की भरमार । पाठ में आये कठिन शब्दों को रेखांकित कर हाशिये पर उनके अर्थ लिखने की बुरी आदत से तो आजकल के लगभग सभी विद्यार्थी ग्रस्त प्रतीत होते हैं। आखिर ऐसा क्यों?

प्रश्न :

(१) पुस्तकों का क्या महत्व है? (४)
(२) भारतीयों के प्रति लेखक क्या कहते हैं? (४)
(३) बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में अक्सर क्या दिखायी पड़ता है? (४)
(४) विद्यार्थी कौनसी बुरी आदत से ग्रस्त हैं? (२)
(५) आज के विद्यार्थियों को क्या नहीं आता? (२)
(६) हमारी सच्ची मित्र कौन है? (२)
(७) गद्य-खंड़ के लिए उचित शीर्षक दीजिए। (२)

(१३)

उन्नति के पथ पर चलनेवाला छात्र प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व ही उठ बैठता है। नित्यकर्म से निवृत्त होकर वह स्नान करता है। तत्पश्चात भगवान से प्रार्थना करता है कि वह सदा उसका पथ प्रदर्शक रहे। प्रार्थना के बाद व्यायाम करना उत्तम छात्र के लिए आवश्यक है। इसके बिना शरीर सबल, सुंदर और सुगठित नहीं हो सकता। जिस मंदिर में सुंदरता न हो, उसमें बैठनेवाली मूर्ति कभी सुंदर नहीं हो सकती। व्यायाम के बाद थोड़ा जलपान करना अत्यंत हितकार होता है। उसके बाद दैनिक समाचारपत्र भी देखना चाहिए, ताकि संसार, देश, नगर तथा पड़ोसियों की गतिविधियों का परिचय हो जाए। इसका ज्ञान न होने से कभी-कभी बडी हानि होती है। समाचार पठन के पश्चात् विद्यार्थी अपने पाठयविषय का अध्ययन करता है, उस पर विचार तथा नवीन अभ्यास का प्रयत्न करता है।

प्रश्न:

(१) उन्नति के पथ पर चलनेवाला छात्र प्रात:काल कब उठता है? (४)
(२) स्नान करने के बाद छात्र को भगवान से प्रार्थना क्यों करनी चाहिए ? (४)
(३) छात्र के लिए व्यायाम क्यों आवश्यक माना गया है ? (४)
(४) व्यायाम के बाद कौन-सा कार्य आवश्यक माना गया है ? (२)
(५) छात्र के लिए दैनिक समाचारपत्र पढ़ना अनिवार्य क्यों है ? (२)
(६) समाचार पठन के पश्चात् छात्र को क्या करना चाहिए ? (२)
(७) इस गद्यखंड के लिए उचित शीर्षक लिखिए। (२)

(१४)

विद्यार्थी के तीन अर्थ होते हैं। विद्या का अर्थ ग्रहण करने वाला, विद्या का उपार्जन करनेवाला और विद्या ही जिसका अर्थ है वह अर्थात् विद्या को समझा जाता है, बाद में उसको ग्रहण किया जाता है, तब वह विद्या

जीवन की पूंजी बनती है। तात्पर्य विद्यार्थी अपने इस विद्यार्थी काल में अपनी जीवन की पूंजी जमा करता है। पूर्ण विद्या ज्ञान, कला एवं कौशल से बनती है। ज्ञान याने विज्ञान और दर्शन (तत्त्वज्ञान) को जानना। कला में लिखना, पढ़ना, संगीत, नृत्य, चित्र आदि सभी कलाएँ आती हैं और कौशल के अंतर्गत जीवनोपयागी धनोपार्जन के उद्योग आते हैं। पूर्ण विद्या का संपादन पूर्ण जीवन की तैयारी है या पूर्ण विद्या ही पूर्ण जीवन है। कौशल से धनोपार्जन होता है, किंतु धन से जीवन सुखी नहीं बनता। केवल कलाएँ भी जीवन को सुखी नहीं बना सकती और न केवल ज्ञान पर आदमी जिंदा रह सकता है। तात्पर्य, ज्ञान, कला और कौशल का संबंध क्रमश: तन, मन ओर धन से है। ज्ञान से बौध्दिक सुख कला से मानसिक सुख और कौशल से सांपत्तिक सुख प्राप्त होता है। पूर्ण विद्या से तीनों प्रकार का सुख मिलता है। जो जीवन-भर विद्यार्थी होते है, वे अपने जीवन में कभी भी असफल नहीं होते, बल्कि नरश्रेष्ठ बनते हैं।

प्रश्न:

(१) विद्यार्थी के कौन-से व कितने अर्थ होते है? (४)
(२) विद्यार्थी जीवन की पूंजी कब बनती है? (४)
(३) पूर्ण विद्या किस-किस से बनती है ? (४)
(४) ज्ञान का तात्पर्य क्या है ? (२)
(५) कौशल के अंतर्गत क्या आता है ? (२)
(६) व्यक्ति कब नरश्रेष्ठ बनता है ? (२)
(७) इस गद्यखंड को उचित शीर्षक दीजिए। (२)

* * * *